

प्रारंभिक परीक्षा

राष्ट्रपति द्वारा विधेयकों को मंजूरी देने के लिए समय सीमा निर्धारित

संदर्भ

'तमिलनाडु राज्य बनाम तमिलनाडु के राज्यपाल' मामले में हाल ही में दिए गए फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रपति द्वारा उन विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए समय-सीमा निर्धारित की है, जिसे राज्यपाल ने राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए सुरक्षित रखा है।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के मुख्य बिंदु -

- **तीन महीने की समय सीमा:**
 - राष्ट्रपति को राज्यपाल से विधेयक प्राप्त होने की तिथि से **3 महीने के भीतर निर्णय लेना होगा।**
 - यदि देरी होती है, तो **उचित कारण दर्ज किए जाने चाहिए और राज्य सरकार को सूचित किया जाना चाहिए।**
 - यह पहली बार है जब सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 201 के तहत राष्ट्रपति की कार्रवाई के लिए एक विशिष्ट समयसीमा निर्धारित की है।
- **कोई पूर्ण वीटो नहीं:**
 - राष्ट्रपति पूर्ण वीटो का प्रयोग नहीं कर सकता।
 - **सहमति रोकने का औचित्य स्पष्ट, ठोस और विशिष्ट कारणों से होना चाहिए।**
- **अनुच्छेद-143 के तहत सर्वोच्च न्यायालय को संदर्भ:**
 - यदि राज्यपाल किसी विधेयक को असंवैधानिक होने के कारण आरक्षित रखता है, तो राष्ट्रपति से अनुच्छेद-143 के तहत सर्वोच्च न्यायालय की राय लेने की अपेक्षा की जाती है।
 - **अनुच्छेद-143** राष्ट्रपति को कानूनी या संवैधानिक मामलों पर सर्वोच्च न्यायालय की सलाहकारी राय लेने की अनुमति देता है।
 - यद्यपि संदर्भ अनिवार्य नहीं है, फिर भी राष्ट्रपति को विवेकानुसार सर्वोच्च न्यायालय की राय लेनी चाहिए।
- **अर्ध-संघीय संतुलन:**
 - **अनुच्छेद 201 की व्याख्या सहकारी संघवाद की भावना से की जानी चाहिए।**
 - संविधान में **समयसीमा न दी** होने का मतलब यह नहीं है कि अनिश्चितकालीन देरी स्वीकार्य है।

अनुच्छेद-201 राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षण; वह कर सकता/सकती है

- विधेयक को स्वीकृति प्रदान करना
- विधेयक पर स्वीकृति रोकना
- राज्यपाल को निर्देश देना कि वह विधेयक (अपवाद: धन विधेयक) को राज्य विधानमंडल के पुनर्विचार के लिए वापस लौटा दें।

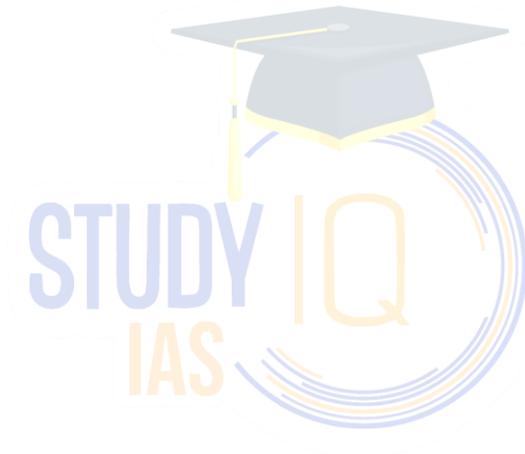
आरक्षित विधेयकों पर पुनर्विचार:

- विधानमंडल को लौटाए गए विधेयक पर छह महीने के भीतर पुनर्विचार करना होगा।
- पुनः पारित होने के बाद इसे राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।
- राष्ट्रपति पुनर्विचारित विधेयक को स्वीकृति देने के लिए बाध्य नहीं है।

विभिन्न आयोग और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संदर्भित आधिकारिक दिशानिर्देश -

- **सरकारिया आयोग (1983):** अनुच्छेद 201 के तहत निर्णयों के लिए निश्चित समयसीमा निर्धारित करने की सिफारिश की गई।
- **पुंछी आयोग (2007):** विधायी प्रक्रियाओं में देरी को रोकने के लिए स्पष्ट समयसीमा की आवश्यकता पर जोर दिया गया।
- **गृह मंत्रालय (दिनांक 4 फरवरी 2016 का कार्यालय ज्ञापन):** सभी मंत्रालयों/विभागों को दो कार्यालय ज्ञापन (OMs) जारी किए गए:
 - राष्ट्रपति के लिए आरक्षित विधेयकों पर निर्णय लेने के लिए 3 महीने
 - तत्काल अध्यादेशों के लिए 3 सप्ताह,

स्रोत: [Indian Express - SC on Article-201](#)



लेजर हथियार प्रणाली

संदर्भ

DRDO द्वारा Mk-II(A) लेजर-डायरेक्टेड एनर्जी वेपन(DEW) सिस्टम का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। यह सिस्टम पूरी तरह से स्वदेशी तौर पर DRDO द्वारा डिजाइन और विकसित किया गया है।

लेजर हथियार क्या हैं?

- लेजर हथियार या DEW ऐसी प्रणालियाँ हैं जो दुश्मन के लक्ष्यों को नुकसान पहुँचाने, निष्क्रिय करने या नष्ट करने के लिए प्रकाश (लेजर) के केंद्रित पुंज (बीम) का उपयोग करती हैं।
- **LASER का तात्पर्य है:** लाइट एम्प्लीफिकेशन बाय स्टिम्युलेटेड एमिशन ऑफ रेडिएशन।
- ये हथियार सुसंगत प्रकाश की उच्च-ऊर्जा पुंज (high-energy beam) उत्सर्जित करते हैं, जो अक्सर अवरक्त या दृश्य स्पेक्ट्रम में होती है।
- इस उपलब्धि के साथ, भारत अमेरिका, चीन और रूस सहित उन विशिष्ट देशों के समूह में शामिल हो गया है जिनके पास उन्नत लेजर हथियार क्षमताएं हैं।
- **लेजर हथियारों के लाभ:**
 - प्रकाश की चाल से हमला: लक्ष्य पर तुरंत प्रहार।
 - प्रति शॉट कम लागत: केवल विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता होती है (मिसाइलों की तुलना में सस्ती)।
 - स्टील्थ: कोई ध्वनि, वापसी (recoil) या धुँएँ का निशान नहीं।
 - परिशुद्धता: उच्च सटीकता, संपार्श्विक क्षति को कम करता है।
 - असीमित प्रहार: जब तक बिजली उपलब्ध है, तब तक बार-बार फायर किया जा सकता है।
- **संबद्ध चुनौतियाँ:**
 - उच्च ऊर्जा मांग गतिशील परिनिर्णयन को सीमित करती है।
 - वर्षा, धूल, कोहरे या धुँएँ में लेजर प्रदर्शन कम हो जाता है।
 - लक्ष्य के लिए प्रत्यक्ष दृश्यता की आवश्यकता होती है।



लेजर हथियारों के प्रकार -

- **सामरिक उच्च ऊर्जा लेजर (HELs):** छोटे यूएवी, मोर्टार, रॉकेट आदि को निशाना बनाता है।
 - शक्ति: 10-100 kW.
 - उदाहरणार्थ DRDO की Mk -II(A) DEW प्रणाली
- **सामरिक उच्च ऊर्जा लेजर:** लंबी दूरी पर मिसाइलों, विमानों और उपग्रहों को निशाना बनाता है।
 - शक्ति: 100 किलोवाट या उससे अधिक।
- **कम-शक्ति वाले लेजर:** दुश्मन के सेंसर को अंधा करने या कैमरों को निष्क्रिय करने जैसे गैर-घातक उपयोगों के लिए।
 - शक्ति: <10 kW
 - दंगा नियंत्रण या अस्थायी रूप से अक्षम करने वाले मिशन में उपयोग किया जाता है।
- **फाइबर लेजर:** प्रकाश, फाइबर ऑप्टिक्स के भीतर उत्पन्न और प्रवर्धित होता है।

स्रोत: [The Hindu - Laser Weapons](#)

बायोमास उपग्रह(Biomass Satellite)

संदर्भ

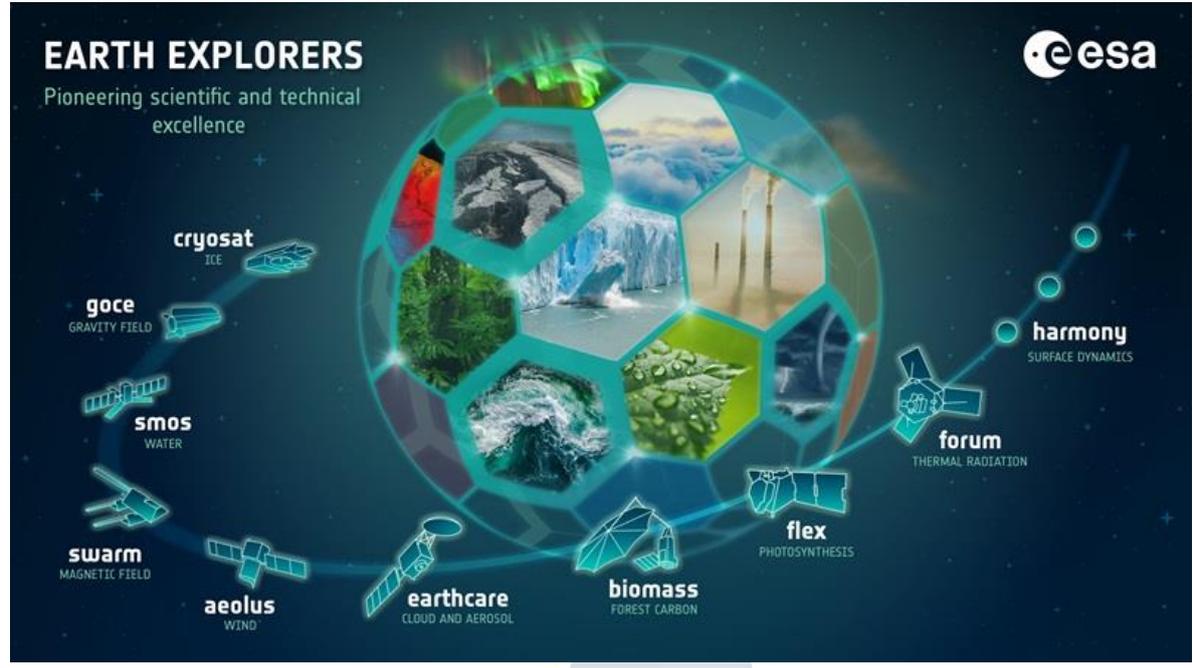
यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) 29 अप्रैल, 2025 को वेगा C रॉकेट के जरिए अपना बायोमास मिशन लॉन्च करेगी।

बायोमास सैटेलाइट के बारे में -

- बायोमास एक यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) पृथ्वी अवलोकन उपग्रह है।
- बायोमास मिशन के मुख्य उद्देश्य:
 - ज़मीन के ऊपर वन बायोमास का अनुमान लगाना।
 - विस्तृत 3D वन संरचना मानचित्र प्रदान करना।
 - कार्बन भंडारण में वन की भूमिका को समझना।
 - सटीक बायोमास डेटा का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन की भविष्यवाणियों में सुधार करना।
 - अंटार्कटिका में बर्फ की चादर की गतिशीलता का निरीक्षण करना।
- सैटेलाइट पेलोड:
 - पृथ्वी की सतह के मानचित्रण के लिए सिंथेटिक अपर्चर रडार (SAR)।
 - इसमें 12 मीटर बड़ा एंटीना लगा हुआ है।
 - यह P-बैंड SAR (लॉन्ग-वेव रडार) का उपयोग करने वाला पहला उपग्रह है:
 - लंबी तरंगदैर्घ्य, घने वन कैनोपी में प्रवेश कर सकती है, जिससे कैनोपी से लेकर जड़ों तक बायोमास का पता लगाना संभव हो जाता है।
 - P-बैंड सिंथेटिक अपर्चर रडार घने पर्णसमूह के आर-पार देख सकता है। यह शाखाओं, तनों और ज़मीनी बायोमास में जमा कार्बन को माप सकता है।
- बायोमास ESA के अर्थ एक्सप्लोरर कार्यक्रम के तहत सातवां मिशन है।



- अर्थ एक्सप्लोरर्स कार्यक्रम में उपग्रहों की एक श्रृंखला शामिल है, जिनका सामान्य लक्ष्य पृथ्वी की प्रमुख प्रणालियों के अवलोकन के माध्यम से प्रमुख वैज्ञानिक प्रश्नों के उत्तर देने में मदद करके पृथ्वी विज्ञान को उन्नत बनाना है।



स्रोत: [Indian Express - Biomass Mission](#)

जीनोम इंडिया परियोजना (Genome India Project)

संदर्भ

जीनोम इंडिया परियोजना का पहला चरण अब पूर्ण हो चुका है। इसने भारत भर से 83 विविध जनसंख्या समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले 10,000 व्यक्तियों के संपूर्ण जीनोम अनुक्रमों को, सफलतापूर्वक सूचीबद्ध किया है।

जीनोम इंडिया परियोजना (GIP) के संदर्भ में -

- इसे जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) द्वारा, 2020 में लॉन्च किया गया था।
- उद्देश्य: भारतीय जनसंख्या का व्यापक जीनोमिक डेटाबेस बनाने के लिए, विविध सामाजिक-आर्थिक, भौगोलिक एवं भाषाई पृष्ठभूमि से जीनोम को अनुक्रमित करना।
- इस परियोजना में भारत भर के लगभग 20 संस्थान शामिल हैं तथा इसका विश्लेषण और समन्वय IISc, बैंगलोर स्थित सेंटर फॉर ब्रेन रिसर्च द्वारा किया जाता है।
- चरण 1: 99 जातीय जनसमूह से 10,000 जीनोम का अनुक्रमण।
- भविष्य का लक्ष्य: 1 मिलियन जीनोम तक अनुक्रम का विस्तार करना।
- जीनोम इंडिया डेटाबेस:
 - इसे हरियाणा के फरीदाबाद में, भारतीय जैविक डेटा केंद्र (IBDC) में रखा जाएगा।
 - यह डेटा-साझाकरण और निजता नीतियों का पालन करने वाले, वैश्विक शोधकर्ताओं के लिए खुला रहेगा।
- निजता उपाय: डेटा को संख्यात्मक कोड के साथ अज्ञात किया जाता है तथा उस तक पहुंच के लिए स्वतंत्र पैनल द्वारा प्रस्तावों की जांच आवश्यक होती है।

जीनोम अनुक्रमण (Genome Sequencing) क्या है?

- यह एक प्रयोगशाला तकनीक है, जो किसी जीव के DNA या RNA के रासायनिक निर्माण खंडों का क्रम निर्धारित करती है।
- प्रमुख जीनोम अनुक्रमण विधियाँ- क्लोन-बाय-क्लोन विधि और संपूर्ण जीनोम शॉटगन अनुक्रमण हैं।
- इसमें न्यूक्लियोटाइड बेस (एडेनिन, ग्वानीन, साइटोसिन और थायमिन) के क्रम को पढ़ना शामिल है, जो किसी जीव के जीनोम में DNA अणुओं को बनाते हैं।
- जीनोम बनाम जीन: जीनोम आनुवंशिक सामग्री या DNA का पूरा सेट है, जबकि जीन DNA का एक विशिष्ट खंड है, जो एक विशेष प्रोटीन या RNA अणु के लिए कोड करता है।

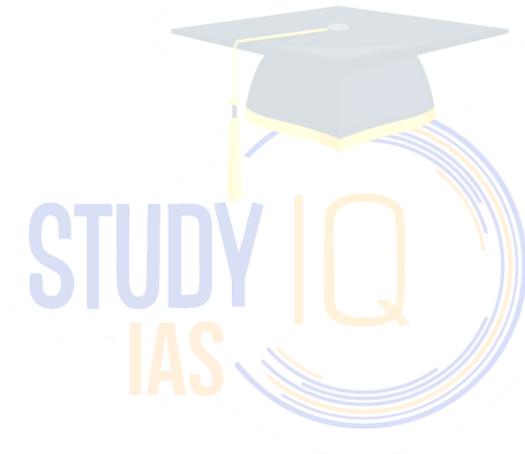
जेनेटिक डेटाबेस क्यों महत्वपूर्ण है?

- आनुवंशिक रोगों को समझना: यह आनुवंशिक जोखिम कारकों की पहचान करने एवं लक्षित उपचार तथा नैदानिक परीक्षण विकसित करने में सहायता करता है। उदाहरण के लिए- रोगों के उपचार के लिए जीन-संशोधित उपचार।
- नए वेरिएंट की खोज: इस परियोजना ने 10,000 जीनोम में 135 मिलियन आनुवंशिक विविधताओं की पहचान की। इनमें से 7 मिलियन विविधताएँ, वैश्विक डेटाबेस में अनुपस्थित हैं।
- जनसंख्या-विशिष्ट अंतर्दृष्टि: कुछ उत्परिवर्तनों की आवृत्ति और प्रभाव के संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- दुर्लभ रोग की पहचान: दुर्लभ बीमारियों के लिए जीन थेरेपी के विकास को सुविधाजनक बनाता है।
- औषधि प्रतिरोध अनुसंधान: दवा की प्रभावकारिता को प्रभावित करने वाले आनुवंशिक वेरिएंट की पहचान करता है।
 - उदाहरण के लिए- दक्षिण भारतीय वैश्य समुदाय में सामान्य एनेस्थेटिक्स को संसाधित करने के लिए जीन का आभाव होता है, जिसके कारण लंबे समय तक प्रभाव या मृत्यु हो सकती है।

वैश्विक जीनोम अनुक्रमण परियोजनाएं -

- **ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट (2003):** यू.एस. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ द्वारा वित्तपोषित एक अंतर्राष्ट्रीय संघ द्वारा, पहला पूर्ण मानव जीनोम।
- **1,000 जीनोम प्रोजेक्ट (2012):** यह अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और जर्मनी के अनुसंधान समूहों के मध्य एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग है।
- **यूरोपीय 1+ मिलियन जीनोम प्रोजेक्ट:** 1 मिलियन से अधिक जीनोम अनुक्रमित करने के लिए, 24 देशों में चल रहा प्रयास।

स्रोत: [Indian Express - Genome India Project](#)



समाचारों में स्थान

मोराग एक्सिस (Morag Axis)



- मोराग एक्सिस, गाजा में एक नव स्थापित इजरायल-नियंत्रित गलियारा है।
- यह राफा और खान यूनिस के दक्षिणी शहरों के मध्य से होकर गुजरता है, फिलाडेल्फिया मार्ग (मिस्र-गाजा सीमा पर) से जुड़ता है।
- यह एक व्यापक इजरायल-नियंत्रित "सुरक्षा क्षेत्र" का निर्माण करता है, जिससे इजरायली सेना को:
 - दक्षिणी गाजा को खंडों में विभाजित करने की अनुमति प्राप्त होती है।
 - गाजा के भीतर आवाजाही को नियंत्रित करने की अनुमति प्राप्त होती है।

स्रोत: [Mint - Morag Axis](#)



समाचार संक्षेप में

बैटइकोमोन (BatEchoMon)

- **BatEchoMon** पूरी तरह से स्वचालित चमगादड़ पहचान एवं वर्गीकरण प्रणाली है तथा भारत में अपनी तरह की पहली प्रणाली है।
- **विकासकर्ता:** कादम्बरी देशपांडे और वेदांत बार्जे, इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर ह्यूमन सेटलमेंट्स (IIHS), बंगलुरु।
- यह डेटा प्रोसेसिंग के लिए एक अल्ट्रासोनिक डिटेक्टर के रूप में ऑडियोमोथ और रास्पबेरी पाई (Raspberry Pi) माइक्रोप्रोसेसर का उपयोग करता है।
- यह रिकॉर्डिंग + वास्तविक समय वर्गीकरण को एकीकृत करने वाली, विश्व स्तर पर पहली प्रणाली है।
- **विशेषताएं:**
 - सूर्यास्त के समय जब चमगादड़ उड़ना आरंभ करते हैं, तो यह स्वचालित रूप से सक्रिय हो जाता है।
 - स्वायत्त रूप से चमगादड़ की गतिविधि को रिकॉर्ड, संग्रहीत, संसाधित एवं विश्लेषण करता है।
 - प्रजातियों के अनुसार चमगादड़ की आवाज़, गतिविधि के स्तर और व्यवहार पैटर्न की पहचान करता है।
 - इसकी लागत, उन्नत अंतरराष्ट्रीय डिटेक्टरों की लागत का लगभग एक तिहाई है।

स्रोत: [The Hindu - BatEchoMon](#)

भाषानेट पोर्टल

- केंद्र सरकार की कई वेबसाइटों ने, हिंदी वेब एड्रेस का उपयोग करना प्रारंभ कर दिया है।
- **सार्वभौमिक स्वीकृति (UA) के संदर्भ में -**
- यह एक वैश्विक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में इंटरनेट को अधिक सुलभ बनाना है।
- यह निम्नलिखित की वकालत करता है:
 - **इंटरनेशनलाइज्ड डोमेन नेम (IDN)** - गैर-अंग्रेजी लिपियों में वेब एड्रेस।
 - **इंटरनेशनलाइज्ड ईमेल एड्रेस** - क्षेत्रीय भाषाओं में ईमेल एड्रेस।
- डोमेन नेम सिस्टम (DNS), ऐतिहासिक रूप से केवल ASCII (अंग्रेजी-आधारित कैरेक्टर सेट) का समर्थन करता है।

भाषानेट पोर्टल -

- यह एक सरकारी पहल है, जो सार्वभौमिक स्वीकृति(UA) और बहुभाषी इंटरनेट पहुंच के सिद्धांतों के अनुरूप, भारतीय भाषा डोमेन नाम और ईमेल एड्रेस के उपयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- इसका उद्देश्य एक बहुभाषी इंटरनेट वातावरण का निर्माण करना है, जहां उपयोगकर्ता अपनी स्थानीय भाषाओं में ऑनलाइन सामग्री तक आसानी से पहुंच सकें एवं उससे संवाद कर सकें।
- इसका संचालन MeitY और नेशनल इंटरनेट एक्सचेंज ऑफ़ इंडिया (NIXI) द्वारा किया जाता है।

स्रोत: [The Hindu - BhashaNet portal](#)

शिपिंग पर पहला वैश्विक कार्बन कर

- हाल ही में अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) की बैठक में शिपिंग उद्योग पर पहला वैश्विक कार्बन कर संबंधी प्रस्ताव पारित किया गया।

- **कार्बन कर के उद्देश्य:**
 - वैश्विक शिपिंग उद्योग से ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन को कम करना।
 - कम उत्सर्जन वाले ईंधन और स्वच्छ समुद्री प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- **कार्यान्वयन कालक्रम: 2028 से शुरू;**
 - **अनुपालन:** जहाजों को स्वच्छ ईंधन संबंधी उपाय अपनाने होंगे या उनके द्वारा उत्पन्न प्रदूषण के आधार पर कार्बन शुल्क का भुगतान करना होगा।
- **प्रमुख देश, जिन्होंने पक्ष में मतदान किया:** भारत, चीन और ब्राजील।

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन(IMO) के बारे में -

- यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है जो अंतर्राष्ट्रीय समुद्री परिवहन को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है।
- इसका प्रमुख ध्यान शिपिंग की सुरक्षा सुनिश्चित करना, समुद्री प्रदूषण को रोकना और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री यातायात से संबंधित कानूनी मामलों को संबोधित करना है।
- इसकी **स्थापना 1948 में** अंतर-सरकारी समुद्री परामर्श संगठन (IMCO) के रूप में की गई थी। **1982 में इसका आधिकारिक नाम बदलकर अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन कर दिया गया।**
- **सदस्यता:** 176 सदस्य देश और 3 सहयोगी सदस्य। (भारत 1959 में IMO में शामिल हुआ)
- वर्तमान में भारत "अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापार में सबसे अधिक हित" वाले 10 राज्यों की श्रेणी के तहत IMO का एक परिषद सदस्य है।



स्रोत: [The Hindu - Global Carbon Tax](#)

सिग्रेट रिंग सेल कार्सिनोमा (SRCC)

- SRCC कोलोरेक्टल कैंसर (CRC) का एक दुर्लभ और आक्रामक उपप्रकार है।
- **मुख्य विशेषताएं:**
 - अत्यधिक **आक्रामक और तेजी से फैलने** वाला, विशेष रूप से **पेरिटोनियम** (पेट की गुहा की परत) में।
 - पारंपरिक कीमोथेरेपी के प्रति प्रतिरोधी।
 - खराब रोग का निदान, आमतौर पर एक **उन्नत चरण में** निदान किया जाता है।
- इसका नाम इसकी अनूठी **सिग्रेट रिंग** जैसी सूक्ष्म संरचना की उपस्थिति के कारण रखा गया है।
- **भारत में व्यापकता:**
 - SRCC दुनिया भर में सभी कोलोरेक्टल कैंसर (सीआरसी) मामलों का ~1% है।
 - यह वैश्विक औसत की तुलना में भारत में **10 गुना अधिक सामान्य** है, जो युवा व्यक्तियों को असमान रूप से प्रभावित करता है।
 - मध्य और उत्तरी भारत में SRCC के सबसे अधिक मामले सामने आए हैं।

स्रोत: [Indian Express - SRCC](#)

फावंगपुई राष्ट्रीय उद्यान

- मिजोरम के फावंगपुई राष्ट्रीय उद्यान के कई हिस्सों में हाल ही में लगी जंगल की आग ने उद्यान के कुल क्षेत्रफल का लगभग नौवां हिस्सा प्रभावित किया है।

फावंगपुरई राष्ट्रीय उद्यान के बारे में -

- **अवस्थिति:** मिजोरम का लॉन्गलैल् जिला, भारत-म्यांमार सीमा के पास।
- इसे **ब्लू माउंटेन राष्ट्रीय उद्यान** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह स्थानीय मिजो लोगों के लिए एक **पवित्र स्थान** है, उनका मानना है कि यहाँ उनके पूर्वजों की आत्माएँ रहती हैं।
- "फावंगपुरई" नाम स्थानीय लाई भाषा से लिया गया है, जहाँ "फावंग" का अर्थ "घास का मैदान" और "पुरई" का अर्थ "वृहत" है, जो पार्क के विशाल घास के मैदानों को दर्शाता है।
- **फावंगपुरई, मिजोरम की सबसे ऊँची चोटी है। (2157 मीटर)।**
- **वनस्पति:** ओक, रोडोडेण्ड्रोन और बांस की दुर्लभ प्रजातियों सहित **पर्वतीय उपोष्णकटिबंधीय वन**।
- **जीव:** स्लो लोरिस, बाघ, तेंदुआ, तेंदुआ कैट, सीरो, एशियाई काला भालू, स्टंप-टेल्ड मैकाक और कैण्ड लंगूर।
- **पक्षी:** दुर्लभ ब्लिथ ट्रेगोपैन, डार्क रम्ड स्विफ्ट आदि।



स्रोत: [Hindustan Times - Phawngpui NP](#)

सारस-एमके ॥ विमान

- भारत के स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए सारस एमके2 विमान की पहली परीक्षण उड़ान दिसंबर 2027 में होने की उम्मीद है।

सारस-एमके ॥ विमान के बारे में -

- सारस एमके2 भारत के स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए **नागरिक विमान का उन्नत संस्करण** है जिसे CSIR-NAL (राष्ट्रीय एयरोस्पेस प्रयोगशालाओं) द्वारा विकसित किया गया है।
- यह 19 सीटों वाला विविध-भूमिका निभाने वाला विमान है, जिसका उद्देश्य मुख्य रूप से **टियर-2 और टियर-3 शहरों को जोड़ना** है जहाँ बड़े हवाई अड्डे उपलब्ध नहीं हैं।
- **बहु-उपयोगिता भूमिका:** यह दूरदराज के स्थानों में कम्प्यूटर विमान, एयर एम्बुलेंस, चार्टर संचालन के रूप में काम कर सकता है।



स्रोत: [The Hindu - Saras](#)

संपादकीय सारांश

अमेरिका-ईरान परमाणु वार्ता

संदर्भ

हाल ही में ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची और अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ ने मस्कट (ओमान) में अप्रत्यक्ष वार्ता की।

ईरान अब बातचीत करने को क्यों तैयार है?

- **ईरान में पीढ़ीगत बदलाव:**
 - ईरानी की औसत आयु 32 वर्ष है। युवा पीढ़ी ने 1979 की इस्लामी क्रांति, ईरान-इराक युद्ध या 1989 के नेतृत्व परिवर्तन का अनुभव नहीं किया है।
 - वे विचारधारा से अधिक नौकरियों और अर्थव्यवस्था के बारे में चिंतित हैं।
- **आर्थिक दबाव:**
 - ईरान दोहरे अंक की मुद्रास्फीति और उच्च बेरोजगारी का सामना कर रहा है।
 - उदाहरण के लिए, ईरान की मुद्रा रियाल का मूल्य गिरकर अब तक के सबसे निचले स्तर 1 मिलियन रियाल प्रति अमेरिकी डॉलर पर आ गया है।
 - सरकार विदेशी निवेश को अस्तित्व के लिए आवश्यक मानती है।
 - उदाहरण के लिए, अगस्त 2024 में, राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने कहा कि ईरान को 100 बिलियन डॉलर के विदेशी निवेश की आवश्यकता है।
- **घरेलू राजनीति में बदलाव:**
 - प्रतिबंधों से राहत पाने के लिए समझौते पर जोर दे रहे हैं।
 - संसद में बहुमत के बावजूद रूढ़िवादी, वार्ता में बाधा नहीं डाल रहे हैं।
 - उदाहरण के लिए, सर्वोच्च नेता खामेनेई (85 वर्ष) शासन की स्थिरता के लिए समझौतों के प्रति खुले नजर आ रहे हैं।
- **बदलती भू-राजनीति:**
 - **कमजोर हुई 'प्रतिरोध की धुरी':**
 - "प्रतिरोध धुरी" (हिजबुल्लाह, हुती, आदि) के माध्यम से क्षेत्रीय प्रभाव कमजोर हो गया है।
 - **बदलते अरब विचार:**
 - सऊदी अरब जैसे देश, जो पहले 2015 के समझौते का विरोध कर रहे थे, अब ईरान के साथ बातचीत के माध्यम से समाधान और आर्थिक भागीदारी का समर्थन कर रहे हैं।
 - **रूस का बदलता रुख:**
 - यद्यपि रूस ने यूक्रेन युद्ध के बाद तेहरान के परमाणु रुख का समर्थन किया था, तथापि अब वह समझौते के प्रति समर्थन दोहरा रहा है।

ईरान-ट्रम्प समीकरण: शत्रुता से व्यावहारिकता तक -

- **वार्ता का इतिहास:**
 - ईरान 2003 से E3 (फ्रांस, जर्मनी, यूके) के साथ और 2013 से अमेरिका के साथ बातचीत कर रहा है।
 - ये वार्ताएं अक्सर तब होती हैं जब अमेरिका अपनी सैन्य धमकियां बढ़ाकर अपनी स्थिति मजबूत करता है।
- **ट्रम्प के 2018 में वापसी का प्रभाव:**
 - **ट्रम्प 2015 के JCPOA परमाणु समझौते से बाहर निकल गये।**
 - ईरान ने जवाब दिया:
 - अधिक यूरेनियम संवर्धन (60% तक)

- 2018 में खामेनेई द्वारा घोषित "युद्ध नहीं, वार्ता नहीं" का रुख।
- जनवरी 2020 में जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या के बाद ईरान का अमेरिका के प्रति अविश्वास बढ़ गया।
- इसके बावजूद, ईरान ने कूटनीति को पूरी तरह नहीं छोड़ा - बातचीत के लिए जगह खुली रखी।

संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) - 2015

- ईरान और विश्व शक्तियों के समूह - P5+1 के बीच एक ऐतिहासिक परमाणु समझौता है।
 - P5: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य- अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, चीन
 - +1 - जर्मनी
- JCPOA की मुख्य शर्तें:
 - ईरान ने केवल 3.67% तक यूरेनियम संवर्धन करने पर सहमति व्यक्त की (जो हथियारों के लिए आवश्यक ~90% से बहुत कम है)।
 - ईरान अपने भंडार में 98% की कटौती करेगा, जो ~10,000 किलोग्राम से घटकर 300 किलोग्राम रह जाएगा।
 - फोर्दो भूमिगत सुविधा का उपयोग 15 वर्षों तक यूरेनियम संवर्धन के लिए नहीं किया जा सकेगा।
 - IAEA (अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी) को परमाणु स्थलों तक पूरी पहुँच दी गई।
 - ईरान को अमेरिका, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों से राहत मिली।

- रणनीतिक धैर्य:
 - ईरान ने बाइडेन के नेतृत्व में JCPOA में औपचारिक रूप से पुनः शामिल होने से परहेज किया (2021-22 वियना वार्ता)।
 - इस दृष्टिकोण ने अब उसे ट्रम्प के नेतृत्व में एक नए समझौते पर बातचीत करने का अवसर दिया है, जिससे उसे सफलता का दावा करने का मौका मिला है।

आगे क्या होने की संभावना है?

- साझा लक्ष्य:
 - अमेरिका चाहता है: ईरान का परमाणु निरस्त्रीकरण।
 - ईरान चाहता है: प्रतिबंधों में राहत और आर्थिक भागीदारी।
- ईरान की धार्मिक स्थिति:
 - सर्वोच्च नेता खामेनेई का फतवा परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध लगाता है।
 - ईरान का कहना है कि परमाणु संवर्धन रक्षात्मक है, आक्रामक नहीं।
- संभावित बाधाएं:
 - ट्रम्प केवल निरस्त्रीकरण से अधिक की मांग कर सकते हैं:
 - ईरान के बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम में कटौती
 - प्रॉक्सी समूहों (हुती, हिजबुल्लाह) को समर्थन समाप्त करना
- इजराइल:
 - ईरान की परमाणु गतिविधि पर पूर्ण रोक चाहता है। नेतन्याहू कूटनीति के बजाय सैन्य विकल्प के पक्षधर हैं।
 - हालाँकि, यदि अरब देश ट्रम्प की आगामी क्षेत्रीय यात्रा के दौरान ईरान का समर्थन करते हैं, तो नेतन्याहू की समझौते को रोकने की क्षमता कमजोर हो सकती है।
- क्या यह समझौता हो पाएगा:
 - खामेनेई ने अराघची को बातचीत करने का पूरा अधिकार दिया है।
 - 2015 का ब्लूप्रिंट (JCPOA) अभी भी मौजूद है; इसे जल्दी से अपडेट किया जा सकता है।

स्रोत: [Indian Express - US-Iran](#)